© January 2026 | IJIRT | Volume 12 Issue 8 | ISSN: 2349-6002

शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Dr. Kashmir Singh
व्याख्याता, शारीरिक षिक्षा विभाग, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेषन, भोपाल (मध्य प्रदेष)

सारांष :

प्रस्तुत शोधपत्र में शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों के मूल्यों का उनके उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमने भोपाल शहर के 16 शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों से 70 षिक्षकों को न्यादर्ष के रूप में चुना है। जिसमें 35 षिक्षक एवं 35 षिक्षिकाओं का समूह है। आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में मूल्यों के मापन के लिए स्वनिर्मित प्रष्नावली एवं उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कार्य अनुभव को प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। तथा षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है कि मूल्यों का उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस शोध कार्य से यह सत्यापित होता है कि उच्च मूल्यों से उच्च उपलब्धियों को हासिल किया जा सकता है।

मुख्यबिन्दु :– षिक्षक एवं षिक्षिकाऐं, मूल्य, उपलब्धि, शारीरिक षिक्षा।

प्रस्तावना :–

शारीरिक षिक्षा, षिक्षा ही है। यह वह षिक्षा है जो बालक के सम्पूर्ण तथा उसकी शरीरिक प्रतिक्रियाओं द्वारा उसके शरीर, मन एवं आत्मा के पूर्णरूपेण हेतु दी जाती है। शारीरिक षिक्षा का लक्ष्य प्रत्येक बालक को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से तन्दुरूस्त बनाना और उसमें व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों का विकास करना होना चाहिए ताकि वह लोगों के साथ खुषी से रह सके और स्वयं को एक अच्छा नागरिक महसूस कर सके।

मानव जीवन में अनेक प्रकार की परेषानियाँ और तनाव हैं। लोग विभिन्न प्रकार की चिंताओं से घिरे रहते हैं। खेल–कूद हमें इन परेषानियों, तनावों एवं चिंताओं से मुक्त कर देती हैं। खेल कूद को जीवन का आवष्यक अंग मानने वाले जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम होते हैं।

संत रामकृष्ण परमहंस का कथन है कि ईष्वर ने संसार की रचना खेल–खेल में की है। अर्थात् परमात्मा को खेल बहुत पसंद है। तो फिर परमात्मा की कृति मनुष्य खेलों से क्यों दूर रहे! खेल खेलकर ही लोग जान सकते हैं कि जीवन एक खेल है। जीवन को बहुत गंभीर और तनावयुक्त नहीं बनाना चाहिए। सभी हँसते–खेलते जिएँ तो संसार की बहुत सी परेषानियाँ मिट जाएँ। अतः जीवन में खेल–कूद का महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए।

खेल–कूद स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। ये शरीर के विभिन्न अंगों के उचित संचालन में मददगार होते हैं। खेलने से शरीर को व्यायाम होता है। तथा पसीने के रूप में शरीर में जमा जल बाहर निकल आता है। खेल–कूद शरीर और मन में ताजगी लाता है। इनसे मांसपेषियाँ सुगठित हो जाती हैं। मन की ऊब मिटाने और चित्त में प्रसन्नता लाने के लिए खेलों की जितनी भूमिका है उतनी शायद अन्य किसी चीज़ की नहीं। यही कारण है कि अलग–अलग समाज में देष में विभिन्न प्रकार के खेलों को पर्याप्त महत्व दिया जाता है।

विद्यायालयों तथा अन्य उच्च षिक्षा संस्थानों में षारीरिक षिक्षा को षिक्षा का एक आवष्यक अंग माना जाता है। खेलों से संबंधित अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। विद्यालयों में वार्षिक खेल समारोह होते हैं। हर दिन एक घंटी खेल घंटी होती है। खेल–प्रषिक्षक इस घंटी में बच्चों को तरह–तरह के खेल खेलना सिखाते हैं। बच्चे उत्साहित होकर खेलते हैं तथा तनाव से मुक्त होकर पुनः पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करते हैं।

मूल्य :–

'मूल्य' शब्द का प्रयोग व्यक्ति की अभिरूचि तथा प्रेरणाओं के मापन हेतु किया जाता है। मूल्य का सम्बन्ध व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण तथा उससे सम्बंन्धित व्यवहार एवं कार्य से होता है। मूल्य जिसमें लोग रूचि रखते हैं, वे अनुगृहित, सम्मान सूचक पदवीं और आनंदित होने की इच्छा रखते हैं। मूल्य का तात्पर्य किसी व्यक्ति के उस गुण से है जो उसे उपयोगी, महत्वपूर्ण तथा सम्माननीय बनाता है। इस प्रकार मूल्य व्यक्ति के आंतरिक तथा बाह्य दोनों गुणों को व्यक्त करता है। ज्ञान के प्रकाष में की गयी मानवीय क्रियायें तथा मानवोचित जीवन लक्ष्यां को ही मूल्य की संज्ञा दी जा सकती है।

'मूल्य' पद विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। इस पद की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है जूल्स हैनरी इसे कुछ ऐसे परिभाषित करते हैं कि हम इसे प्यार, दयालुता, शान्ति, संतुष्टि, हास्यता, ईमानदारी, सज्जनता, आरामदायक, सादगी के रूप में मानते हैं। एम. टी. राम जी के अनुसारः– मूल्य का अर्थ है वह जो अभीष्ट है। मूल्यों को जीवन के ऐसे मार्गदर्षक सिद्धांत कहा जा सकता है जो व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ सामाजिक कल्याण एवं समायोजन में सहायक हैं और जो संस्कृति के अनुरूप होते हैं।

विद्यालय में प्रार्थना स्थल होता है जहाँ विद्यार्थियों को आत्मानुषासन, मौन, ध्यान, लय एवं उचित गति से गायन में दीक्षित किया जाता है। प्रार्थना मानव मन व हृदय में श्रद्वा–भक्ति का संचार करती है। मूल्यों के विकास में खेलकूद की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। खेल में छात्र अपनी स्वतंत्रता का आनंद उठाते हैं। षारीरिक षिक्षा के माध्यम से सत्य बोलने, सहयोग, प्रेम, अहिंसा, सहनषीलता, अनुषासन, भ्रातृत्व, समानता, टीम भावना आदि मूल्यों को विकसित करने में समर्थ होते हैं। षारीरिक व्यायाम तथा योग क्रियाओं के माध्यम से स्वास्थ्य, सहयोग, व्यवस्था, सौंदर्यबोध, सहिष्णुता, षालीनता आदि मूल्य विकसित किये जा सकते हैं।

उपलब्धि :–

उपलब्धि से तात्पर्य है, षिक्षार्थी को किसी क्षेत्र में षिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देषों के द्वारा कितनी मात्रा में लाभान्वित होता है, अर्थात् किसी व्यक्ति की उपलब्धि उस मात्रा के द्वारा प्रकट होती है, जिस मात्रा में वह प्रदान किये जाने वाले प्रषिक्षण के द्वारा ज्ञान अथवा कौषल का उर्पाजन करता है। राबिनसन व हरलॉक ने उपलब्धि की परिभाषा इस प्रकार दी है, "व्यक्ति के सीखने और जो सीखा है, उसे कार्यान्वित करने की स्थिति या स्तर ही उपलब्धि है।" उनके अनूुसार, "उपलब्धि केवल ज्ञान या निपुणताओं की प्राप्ति ही नहीं है अपितु दृष्टिकोण, रूचि और मूल्य भी उपलब्धि के स्वरूप हैं। उपलब्धि, सीखने के दृष्टिकोण और रूचि का परिणाम है, क्यों कि ये उपलब्धि की सीमा को प्रभावित करते हैं।" "उपलब्धि का अर्थ है पूर्णता प्राप्ति। उपलब्धि षिक्षा का सबसे पहला और महत्वपूर्ण लक्ष्य है। षिक्षा देने की प्रक्रिया में केन्द्रबिन्दु विद्यालयों और महाविद्यालयों के विषय में विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है। षिक्षित लोगों की उपलब्धियां ही षिक्षा के परिणाम कहे जा सकते हैं।"

षिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली पीढ़ी पर अपना प्रभाव डालती है। षिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विष्व–व्यवस्था तथा मानव–जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। मानव–समाज एवं देष की उन्नति उत्तम षिक्षकों पर निर्भर है। शारीरिक षिक्षा के क्षेत्र में षिक्षक की उपयोगिता को चुनौती नहीं दी जा सकती है। षिक्षक षिक्षा को अपने में आत्मसात करके एक नया व्यक्तित्व का सृजन करता है। व्यक्तित्व ही हमेषा व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकता है। षिक्षक हमेषा अपने व्यक्तित्व से विद्यार्थियों को प्रभावित करके उनका रूपान्तर कर देता है। हुमायूं कबीर का कथन है "षिक्षा पद्धति की कुषलता षिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे षिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम षिक्षा–पद्धति का भी असफल होना अवष्यम्भावी है। अच्छे षिक्षकों द्वारा षिक्षा–पद्धति के दोषों को भी अधिकांषतः दूर किया जा सकता है।" माध्यमिक षिक्षा आयोग ने लिखा है "अपेक्षित षिक्षा के पुनर्निमाण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व षिक्षक–उसके व्यक्तिगत गुणों, उसकी शैक्षिक योग्यताएं, उसका व्यवसायिक प्रषिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से षिक्षकों पर निर्भर है जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं।"

पूर्व शोध कार्य :–

एम.के. सिंह ने "प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन" किया है। जिनका उद्देश्य शिक्षिकों व शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। तथा उन्होंने न्यादर्श के रूप में आगरा शहर के 21 से 35 आयु वर्ग के 350 अध्यापक व 350 अध्यापिकाओं का चयन यादृच्छिक चयन विधि से किया गया है उन्होने पाया कि शिक्षक व शिक्षिकाओं के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है। शिक्षिकाओं की अर्थ सम्बन्धी वरीयता अधिक है जबकि शिक्षकों की सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि पायी गई और शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

षिवरामकृष्णन व नागेष्वरन् ने 156 उच्च व निम्न उपलब्धि प्राप्त विष्वविद्यालय स्तर की महिला कबड्डी खिलाड़ियों के मध्य स्व–प्रत्यय, आत्म–विष्वास, संज्ञानात्मक चिन्ता, प्रतियोगिता पूर्व चिन्ता व दैहिक चिन्ता चरों का मापन किया और पाया कि स्व–प्रत्यय, आत्म विष्वास और संज्ञानात्मक चिन्ता में विष्वविद्यालय स्तर की उच्च व निम्न उपलब्धि प्राप्त महिला खिलाड़ियों में सार्थक अंतर था। जबकि प्रतियोगिता पूर्व चिन्ता व दैहिक चिंता के मध्य निम्न व उच्च उपलब्धि प्राप्त महिलाओं ने कोई सार्थक अन्तर प्रदर्षित नहीं किया।

कोथरान ने पाया कि शारीरिक षिक्षा के षिक्षक का ध्यान उनके मूल्य अभिविन्यास पर ही केन्द्रित नहीं रहता है, बल्कि साथ ही उसमें अधिगम तथा सामाजिक जिम्मेदारी पर भी ध्यान केन्द्रित रहता है। उन्होने आगे सुझाव दिया कि शारीरिक षिक्षक मूल्य अभिविन्यास से भी आगे उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। षिक्षक को अपने दृष्टिकोण में दो व दो से अधिक मूल्य अभिविन्यास को सम्मिलित करना चाहिए।

समस्या कथन :– "षारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों के मूल्यों का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देष्य :–

- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों का उनके उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँः–

- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

अध्ययन का न्यादर्ष :–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल शहर के 16 शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों से 70 षिक्षकों को लिया गया। जिसमें 35 षिक्षक तथा 35 षिक्षिकाऐं है।

शोध विधि :–

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर :–

- स्वतन्त्र चर– मूल्य, षिक्षक एवं षिक्षिकाऐं एवं उपलब्धि
- आश्रित चर – उपलब्धि

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध कार्य में आंकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी टेस्ट

- सह–सम्बन्ध

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण :–

आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में मूल्यों के मापन के लिए स्वनिर्मित प्रष्नावली एवं उपलब्धि के मापन के लिए पूर्व कार्य अनुभव का प्रयोग किया गया।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण :–

परिकल्पना :–1

शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तलिका क्रमांक :– 1 शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्य सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
षिक्षक	35	66.34	4.34	1.56
षिक्षिकाऍ	35	65.64	5.98	

सारणी क्रमांक :– 1 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं का मध्यमान 66.34 व 65.64 पाया गया तथा उनका मानक विचलन 4.34 व 5.98 पाया गया। दोनों समूह के बीच श्जश मान 1.56 पाया गया। जो सारणी मान से कम है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "षारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत होती हैं। दोनों समूह में सार्थक अंतर नहीं है।

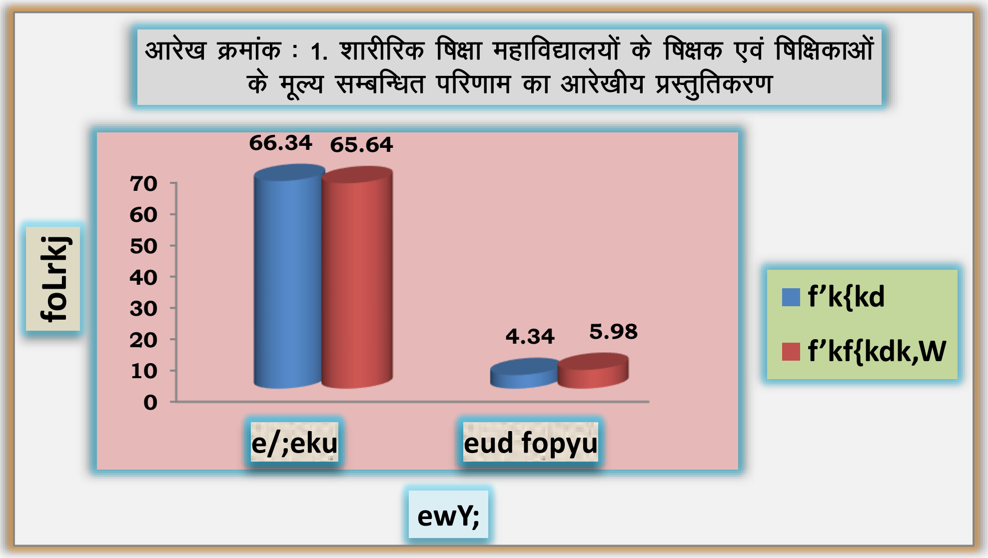

निष्कर्ष :– उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना :– 2

शारिरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका क्रमांक :–2 शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
षिक्षक	35	70.6	5.78	4.23
षिक्षिकाऍ	35	68.12	8.23	

सारणी क्रमांक :– 2 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि का मध्यमान 70.6 व 68.12 पाया गया तथा उनका मानक विचलन 5.78 व 8.23 पाया गया। दोनो समूह के बीच श्जश मान 4.23 पाया गया जो सारणी मान से ज्यादा है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "षारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में सार्थक अन्तर है।

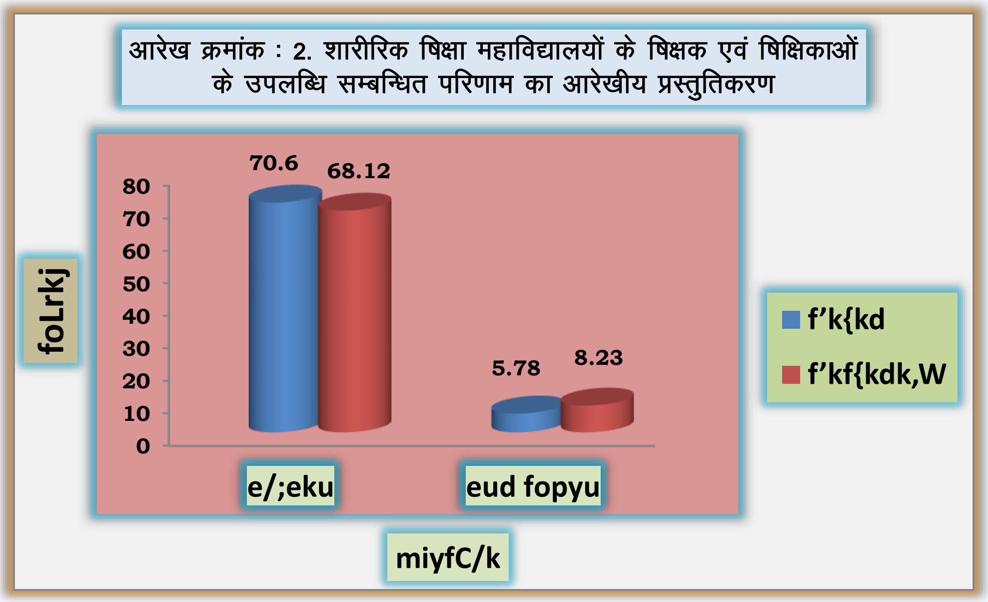

निष्कर्ष :–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना :– 3

शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

तलिका क्रमांक :– 3 शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि के सह–संबंध संबंधित परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	सह–सम्बन्ध
मूल्य	70	66.34	.786
उपलब्धि		65.64	

सारणी क्रमांकः 3 से यह ज्ञात होता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि का मध्यमान 66.34 व 65.64 पाया गया। दोनों समूह के बीच सह–सम्बन्ध .786 पाया गया। अर्थात् हमारी परिकल्पना "षारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

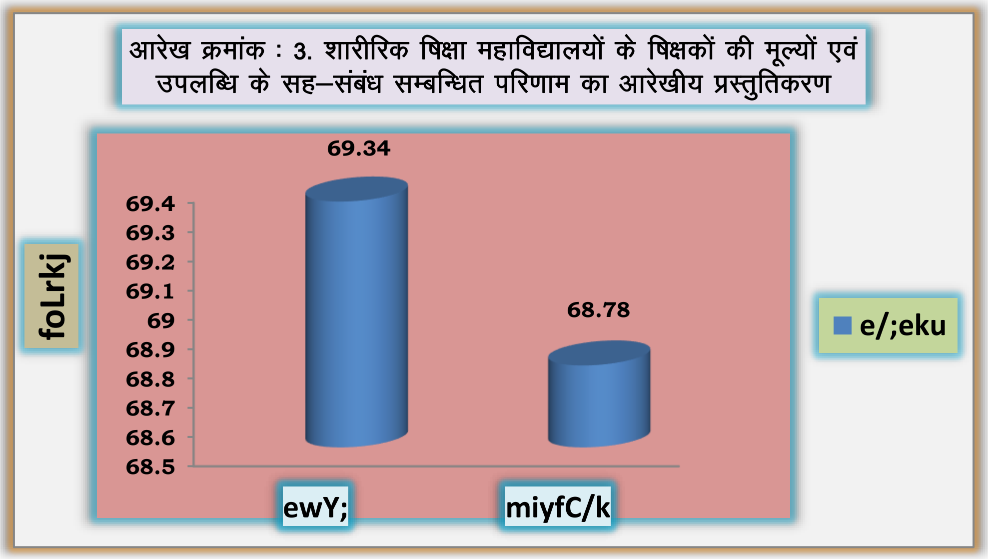

निष्कर्ष :–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शारीरिक षिक्षा महाविद्यालयों के षिक्षकों की मूल्यों एवं उपलब्धि में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

परिणाम :–

खेल–कूद का व्यक्तित्व के विकास मे बहुत योगदान है। इनसे शारीरिक एवं मानसिक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। खुले मैदानों में होने वाले खेल खेलकर व्यक्ति स्वस्थ बना रह सकता है। खुली ताजी हवा फेफड़ों में अधिक प्रवेष करती है। व्यक्ति निरोगी रहता है। उसकी झिझक मिटती है, वह समाजोपयोगी कार्यों में सहभागिता करता है। आजकल अच्छे खिलाड़ियों को बहुत सम्मान प्राप्त है। उसे धन भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। सरकार एवं निजी संस्थाएँ उन्हें अपने यहाँ अच्छी नौकरी पर रखती हैं। समाज में उन्हें उचित आदर मिलता है। उपर्युक्त कारणों से खेल–कूद का महत्व दिनो–दिन बढ़ता जा रहा है। सरकार एवं खेल–संगठन खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नषील हैं। बालकों, बालिकाओं तथा युवाओं को प्रतिदिन कोई न कोई खेल अवष्य खेलना चाहिए। जब देष के बच्चे और युवा स्वस्थ रहेंगे तो देष के निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी। खेलों से व्यक्तियों में जिन मूल्यों का विकास होता है उससे वह उच्च उपलब्धियों को हासिल करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- षिन्द बी.एस. (2012)ः ”शारीरिक षिक्षा के सिद्धांत, इतिहास तथा मनोविज्ञान”, र्स्पोट्स पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली।
- भट्ट अल्ताफ हसैन (2010)ः ”शारीरिक षिक्षा में पाठ्यक्रम रूपांकन”, र्स्पोट्स पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली।
- थानी योगराज (2009)ः ”शारीरिक षिक्षा और खेल मनोविज्ञान”, खेल साहित्य पब्लिष केन्द्र।
- धनन्जय शाह (2008)ः ”शारीरिक षिक्षा में सांख्यिकी”, र्स्पोट्स पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली।
- सिंह आर. पी., कुमार सुनील, कुमार योगेष (2012)ः ”शारीरिक षिक्षा”, खेल साहित्य पब्लिष केन्द्र।
- शर्मा सुनीता (2008)ः ”शारीरिक षिक्षा के विविध आयाम”, राजपूत पब्लिकेषन्स।
- रामललित (2009)ः ”शारीरिक षिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ”, र्स्पोट्स पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली।